

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 26, न्यायाधीश 6-9 गिदोन और उसके बाद

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 26, न्यायाधीश 6-9, गिदोन और उसके बाद है।

पुनः नमस्कार. इस खंड में हम अगले न्यायाधीश गिदोन की कहानी पर चर्चा करने जा रहे हैं, और यह उसके एक बेटे, अबीमेलेक के साथ बिताए समय के बाद की कहानी है। इसलिए, हम इस खंड में न्यायाधीश 6 से 9 तक को देखेंगे। तो, सैमसन के बाद गिदोन पुस्तक के सबसे प्रमुख न्यायाधीशों में से एक है, जिसकी कहानी में अच्छे चार अध्याय हैं।

गिदोन तीन अध्याय का है, साथ ही उसका पुत्र भी। तो, इसकी शुरुआत वैसे ही होती है जैसे प्रमुख न्यायाधीशों की अधिकांश कहानियाँ होती हैं। यह अध्याय 5 की अंतिम पंक्ति के ठीक बाद आता है, जो कहता है कि देबोराह और बेरिक के समय के बाद भूमि को 40 वर्षों तक आराम मिला था।

और अध्याय 6, श्लोक 1, हमें यह बताने से शुरू होता है कि फिर से, इस्राएल ने प्रभु की दृष्टि में बुरा किया। परमेश्वर ने उन्हें सात वर्षों के लिए मिद्यानियों के हाथ में दे दिया, और उन्होंने इस्राएलियों पर विभिन्न तरीकों से अत्याचार किया, उनकी फसलें खा लीं और उनके लिए कुछ भी नहीं छोड़ा, उनका भोजन चुरा लिया, इत्यादि। इस प्रकार, इस्राएल को बहुत नीचे लाया गया, अध्याय 6, पद 6, और लोगों ने फिर से परमेश्वर से मदद की गुहार लगाई।

इसलिए, पहले के कुछ वृत्तांतों के विपरीत, जहां अगली बात यह कही गई थी कि भगवान ने अगले न्यायाधीश को खड़ा किया और उनके माध्यम से इज़राइल को बचाया, अब हमारे पास बहुत अधिक विस्तारित कहानी है। और यह हमें, सबसे पहले, एक भविष्यवक्ता के पास ले जाता है जो उन्हें बताता है कि भगवान मिस्र से उनके प्रति वफादार रहे हैं, और उन्हें एमोरियों के देवताओं से नहीं डरना चाहिए, पद 10 में। लेकिन फिर हमारे पास प्रभु का दूत है और गिदोन के पिता योआश के पास आकर दिखाई दिया।

और इसलिए, हम पद 11 में प्रभु के दूत की कहानी का अनुसरण कर रहे हैं। वह उस स्थान पर आता है, वह संपत्ति जो योआश की है, और वह वास्तव में गिदोन को दिखाई देता है। गिदोन वास्तव में वहाँ गेहूँ पीट रहा है, और इस कहानी का स्वर्गदूत हमें गिदोन के बारे में कुछ दिलचस्प बातें बताता है, और हम उनमें से कुछ को यहाँ देखेंगे।

गिदोन ने यहोवा के दूत से चिन्ह मांगा। तो, गिदोन अपने घर में जाता है, कुछ भोजन तैयार करता है, वापस आता है, उसे वहाँ रखता है, और प्रभु का दूत पद 20, पद 21 में अपनी छड़ी की नोक से उसे छूता है, और वह तुरंत भस्म हो जाता है आग के साथ। तो, यह स्पष्ट रूप से प्रभु की ओर से एक संकेत है कि यह प्रभु का दूत था, और हम इसे पद 22 में देखते हैं।

गिदोन ने जान लिया कि यह यहोवा का दूत है, और उस ने वहीं उसकी आराधना की। वह एक वेदी बनाता है, पद 24, और इसे शांति का स्वामी कहता है, और यह आज तक वहीं खड़ी है, फिर पुस्तक के लिखे जाने के दिन तक। मैं यहां रुकता हूं और प्रभु के दूत की पहचान के बारे में थोड़ी बात करता हूं क्योंकि यह पवित्रशास्त्र में एकमात्र स्थान नहीं है जहां प्रभु के दूत का उल्लेख किया गया है।

तो, इस बात पर बहुत चर्चा हुई कि प्रभु का यह दूत कौन था या क्या था, और इसलिए हम उनमें से कुछ चर्चाओं के माध्यम से बात करने का प्रयास करेंगे। आमतौर पर, भगवान का यह दूत कौन है या क्या है, इसके लिए तीन अलग-अलग विकल्प प्रस्तुत किए जाते हैं। सबसे पहले, हम केवल एन्जिल शब्द कहेंगे, यह अनुवादित एन्जिल, हिब्रू में मलक है, और इसका अर्थ संदेशवाहक है।

तो, प्रभु का स्वर्गदूत प्रभु का एक दूत है, एक प्रतिनिधि है, जो किसी प्रकार का संदेश लाता है। पैगंबर मलाकी, उसका नाम मलाकी है। प्रत्यय *की* का अर्थ है मेरा, इसलिए उसका नाम मेरा दूत, भगवान का दूत है।

तो, विकल्प क्या हैं कि देवदूत भगवान क्या हैं, और वह क्या करते हैं? एक विकल्प यह है कि यह वास्तव में मूल रूप से एक देवदूत है, जैसे देवदूत गेब्रियल, देवदूत माइकल, स्वयं ईश्वर से हीन, लेकिन स्पष्ट रूप से दिव्य अधिकार के साथ। कुछ लोगों ने तर्क दिया है, नहीं, यह किसी व्यक्ति या लोगों के समूह के समक्ष दृश्यमान उपस्थिति में स्वयं ईश्वर का एक अस्थायी या क्षणिक अवतरण है। एक तीसरा विकल्प जो अक्सर प्रस्तुत किया जाता है वह यह है कि देवदूत भगवान वास्तव में वह है जिसे हम स्वयं ईसा मसीह की पूर्व-अवतरित अभिव्यक्ति कह सकते हैं, अर्थात् ईसा मसीह के नए नियम के युग में अवतार लेने से पहले, वह अलग-अलग समय में मानव रूप या देवदूत रूप में अवतरित हुए थे और पुराने नियम में स्थान।

एक मुख्य पाठ है जो हमें निर्गमन की पुस्तक में देवदूत भगवान के बारे में बताता है, इसलिए मैं आपसे उस ओर जाने के लिए कहने जा रहा हूं। निर्गमन अध्याय 23 हमें देवदूत भगवान से परिचित कराता है, और यह दर्शाता है कि देवदूत भगवान किस प्रकार परमेश्वर के चरित्र और उसके अधिकार को धारण करते हैं। तो निर्गमन 23, श्लोक 20 से शुरू करते हुए, परमेश्वर यहां मूसा के माध्यम से इस्राएलियों से बात कर रहा है, और कहता है, देखो, मैं तुम्हारे आगे आगे एक दूत भेजता हूं जो मार्ग में तुम्हारी रक्षा करेगा, और तुम्हें उस स्थान पर पहुंचाएगा जो मैं ने तैयार किया है।

उस पर ध्यान से ध्यान देना, उसकी बात मानना, और उससे बलवा न करना, क्योंकि वह तेरा अपराध क्षमा न करेगा, क्योंकि उस में मेरा नाम है। तो स्पष्ट रूप से, इस उदाहरण में, ऐसा प्रतीत होता है कि देवदूत के पास भगवान के लिए बोलने का अधिकार है। उसमें मेरा नाम है।

और कई लोगों ने कहा है कि ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह लगभग स्वयं भगवान है। यह कहता है कि वह तुम्हारे अपराध को क्षमा नहीं करेगा। इसमें निहित, दूसरा पक्ष यह प्रतीत होता है कि उसके पास ऐसा करने की शक्ति होगी।

उसके पास ऐसा करने का अधिकार होगा। वह पापों को क्षमा कर सकता है, लेकिन यदि आप विद्रोह करेंगे तो इस मामले में वह ऐसा नहीं करेगा। परन्तु यदि तू ध्यान से उसकी बात माने, पद 22, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्वेषी हो जाऊंगा।

मैं तुम्हारा शत्रु नहीं बनूंगा। मैं तुम्हारे शत्रुओं का शत्रु बन जाऊंगा, जो तुम्हारे लिये अच्छी बात है। और पद 23, जब मेरा दूत तुम्हारे आगे आगे चलकर तुम्हें एमोरियों, हितियों, इत्यादि के पास ले आएगा, तब मैं उन्हें मिटा डालूंगा।

और इस तरह से। तो, इस मामले में, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु के दूत की पहचान या प्रभु के दूत का अधिकार स्वयं प्रभु के साथ, स्वयं ईश्वर के साथ बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, बाद में अध्याय 32 और 33 के भाग में एक अन्य परिच्छेद में, हम प्रभु और उसके दूत के बीच अधिक अंतर देखते हैं।

तो, आइए उस पर संक्षेप में नजर डालें। अध्याय 32, श्लोक 34 से प्रारंभ। अगले अध्याय में, लगभग श्लोक 17 तक।

और यहाँ प्रभु के दूत की विशेषताएं स्वयं ईश्वर से भिन्न प्रतीत होती हैं। उदाहरण के लिए, अध्याय 33, श्लोक 2 कहता है, मैं तुम्हारे आगे एक स्वर्गदूत भेजूंगा। मैं कनानियों, एमोरियों, इत्यादि को बाहर निकाल दूँगा।

लेकिन इस देवदूत को ऐसे प्रस्तुत नहीं किया जाता जैसे उसमें मेरा नाम हो। वह पापों को क्षमा नहीं कर रहा है या पापों को क्षमा नहीं कर रहा है। तो, सवाल यह है कि वास्तव में यहाँ क्या हो रहा है? कुछ इंगील व्याख्याकारों ने प्रभु के दूत की इन अभिव्यक्तियों को ईसा मसीह के पूर्व-नए नियम के रहस्योद्घाटन के रूप में लिया है, जैसा कि हमने कहा है, मसीह के पूर्व-अवतरित रहस्योद्घाटन।

डैनियल अध्याय 10 और ईजेकील अध्याय 1 में भी एक देवदूत प्रकार का उल्लेख किया गया है, और यह यीशु के वर्णन के समान प्रतीत होता है जो जॉन ने प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 की पुस्तक में कुछ स्थानों पर किया है। यह भी ध्यान दिया गया है कि नए नियम में प्रभु के दूत का कभी भी उल्लेख नहीं किया गया है जब यीशु स्वयं पृथ्वी पर थे। और इसलिए, यदि वह यीशु था, तो उसके आने से पहले उसे प्रभु का दूत कहा जाता था, लेकिन जब वह यहाँ था, तो उसे ऐसा नहीं कहा जाता था।

उसे सिर्फ अवतारी परमेश्वर कहा जाता है। बेशक, यीशु को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए भेजा गया था, उसी तरह जैसे स्वर्गदूत को भेजा गया था। बहुत सारे इंगीलवादियों ने यह तर्क दिया है।

मेरा अपना विचार है कि संभवतः ऐसा नहीं है। मेरे लिए एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि नया टेस्टामेंट पुराने और नए टेस्टामेंट के बीच संबंध बनाने के बारे में बहुत खुला है। बार-बार, हम नए नियम के लेखकों में पुराने नियम के उद्धरण और उपमाएँ और यह कहते हुए पाते हैं कि यह उसे पूरा करने के लिए हुआ था, इत्यादि।

लेकिन यदि ये प्रकटीकरण वास्तव में पूर्व-अवतार रूप में यीशु के थे, तो यह बहुत अजीब लगता है कि नए नियम में ऐसा कुछ नहीं बनाया गया होता। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैथ्यू या अन्य लोगों के लिए यह कहना बहुत आसान होगा, वह यीशु थे, और यीशु अब उन चीजों को पूरा कर रहे हैं। तो, मेरे लिए, न्यू टेस्टामेंट में चुप्पी पहेली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

तो, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ मामलों में, यह केवल एक अलग दूत, ईश्वर का एक देवदूत हो सकता है। कभी-कभी यह एक देवदूत होता है जो ईश्वर की प्रकृति के साथ बहुत अधिक निकटता से जुड़ा होता है, और ऐसा प्रतीत होता है कि गिदोन के दिनों में भी यहीं हो रहा था। तो, यह एक तरह की चर्चा है जो हमें प्रभु के दूत की प्रकृति के बारे में मिलती है।

तो, अब हम न्यायाधीशों के अध्याय 6 को जारी रखते हैं, और गिदोन बहुत मितभाषी है। श्लोक 15 में, वह कहता है, मैं लोगों में सबसे छोटा हूँ, परन्तु परमेश्वर कहता है, श्लोक 16 में, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। जिस अंश को हमने अभी देखा, उसके बाद नीचे आते हुए, भगवान उसे पद 26 में बताते हैं, और इसके बाद, ध्यान दें कि इस अध्याय में भगवान के दूत और भगवान के बीच किस तरह की परस्पर क्रिया होती है।

तो, यह लगभग है, इसीलिए कुछ लोग यह तर्क देंगे कि यह स्वयं भगवान हैं। यह उसके बारे में बात करने के अलग-अलग तरीके हैं, लेकिन शायद व्यक्तिगत रूप से भगवान नहीं, लेकिन निश्चित रूप से उसका एक करीबी प्रतिनिधि है। पद 25 में उससे कहा गया है कि वह बाल की वेदी को गिरा दे और वहां मौजूद अशेरा खम्भे को भी काट डाले, और उसके ऊपर परमेश्वर की एक वेदी बनाए।

बड़ी विडम्बना यह है कि उसे अशेरा के खंभों की लकड़ी लेनी पड़ती है जिसे वह पद 26 में काट रहा है और उसे आग के रूप में, अपने होमबलि के लिए जलाने के रूप में उपयोग करता है। तो, गिदोन ऐसा करता है, जो अच्छी बात है, लेकिन पद 27 में, वह डरता भी है, और वह इस बारे में उन दस नौकरों को छोड़कर किसी और को नहीं बताता है जो उसने उसके साथ किया था। इसलिए, जब हर कोई अगले दिन उठता है, तो वेदियाँ टूट जाती हैं, श्लोक 28, और उन्हें आश्चर्य होता है कि क्या हो रहा है, और उन्हें एहसास होता है कि गिदोन ने ऐसा किया है।

और इसलिए, उन्होंने गिदोन के पिता योआश को चुनौती दी कि वह अपने बेटे को बाहर लाए ताकि वह मर जाए, क्योंकि वे अभी भी बाल और अशेरा के वफादार उपासक हैं, और वे अपनी पूजा के प्रतीकों को गिराए जाने से खुश नहीं हैं। और गिदोन का पिता योआश खड़ा होकर उनका खण्डन करता है, और कहता है, क्या तुम बाल के लिये लड़ोगे? दूसरे शब्दों में, क्या आप वास्तव में इस ईश्वर का बचाव करने जा रहे हैं जो वास्तव में ईश्वर नहीं है, या वह कनानियों का ईश्वर है? या, क्या तुम उसे बचाओगे? क्या आप वह व्यक्ति बनने जा रहे हैं जो उसे बचाता है? जो

कोई उसके लिये विवाद करेगा वह चेतावनी देकर मार डाला जाएगा। यदि वह भगवान है, तो उसे अपने लिए संघर्ष करने दो।

उसे आपकी मदद की जरूरत नहीं है। उसे अपनी वेदी की रक्षा करने दो। और, अब श्लोक 32 में एक दिलचस्प विडंबना यह है कि योआश ने गिदोन का नाम रखा है, या कम से कम उस दिन के बाद से, गिदोन का एक दूसरा नाम भी है, जो यरूबाल है।

और, आप उस नाम के दूसरे भाग, बाल, बाल और येरू में ध्यान से देख सकते हैं, उस भाग का अर्थ है प्रतिस्पर्धा करने का विचार। और इसलिए, यहां शब्दों का खेल चल रहा है। गिदोन का पिता कह रहा है, क्या तू बाल के लिये मुकद्दमा लड़ने जा रहा है? क्या आप उसका बचाव करने जा रहे हैं? क्या आप उसके लिए बहस करने जा रहे हैं? और, गिदोन को जो विडंबनापूर्ण नाम मिलता है वह यह है कि बाल प्रतिस्पर्धा करता है, और उपपाठ के तहत, यह है कि, हाँ, वह अपने लिए प्रतिस्पर्धा करता है, लेकिन गिदोन ही वह है जिसने वास्तव में उसे हराया है, और वह उस विडंबनापूर्ण आवरण को अपने लिए ग्रहण करता है।

बाल को उसके विरुद्ध लड़ने दो, क्योंकि उसने वेदी को तोड़ दिया, और बाल अपनी रक्षा नहीं कर सका। तो, अब इज़राइल के खिलाफ एक निम्नलिखित गठबंधन आ रहा है, लेकिन श्लोक 34 में, प्रभु की आत्मा ने गिदोन को कपड़े पहनाए। उसने तुरही बजाई, और वे लोगों को एक साथ ले आये।

और फिर, हमारे पास अध्याय के अंत तक पद 36 में गिदोन द्वारा परमेश्वर से मार्गदर्शन मांगने की एक दिलचस्प कहानी है। और, यह गिदोन के ऊन, भेड़ के ऊन के ऊन को बाहर निकालने के बारे में एक प्रसिद्ध मार्ग है, और अनिवार्य रूप से भगवान से उसे पुष्टि करने के लिए कहता है कि भगवान वही करने जा रहा है जो भगवान ने पहले ही कहा है कि वह करने जा रहा है। और, वह कहता है, मैं ऊन को बाहर निकालने जा रहा हूँ, और कृपया, भोर को ओस पड़ने दें, और यदि उसके चारों ओर की भूमि सूखी हो, और ऊन गीला हो, जो एक अप्राकृतिक बात है।

आम तौर पर, ओस ज़मीन को गीला कर देती है, लेकिन अगर ज़मीन के चारों ओर और ऊन पर ओस नहीं है, तो मुझे पता चल जाएगा कि आप बोल रहे हैं। तो, भगवान उस अनुरोध को स्वीकार करते हैं। फिर, अपनी बदनामी के लिए, गिदोन दूसरा संकेत मांगता है, जबकि इस बार यह वास्तव में पहले से तीसरा संकेत है।

उसने पहले भी देवदूत से संकेत मांगा था। लेकिन, वह भगवान से इसे दूसरे तरीके से करने और ऊन को सूखा और जमीन को गीला करने के लिए कहता है। भगवान भी उस अनुरोध का उत्तर देते हैं, लेकिन हम सीखते हैं कि यह किया जाने वाला सबसे अच्छा काम नहीं है, क्योंकि, और गिदोन स्वयं यह जानता है।

पद 39 में गिदोन परमेश्वर से कहता है, अपना क्रोध मुझ पर न भड़का। दूसरे शब्दों में, मुझ पर ज़्यादा गुस्सा मत होइए, लेकिन मैं इसे फिर से आजमाना चाहता हूँ। मैं यहां टिके रहने का कारण

यह है कि, कई इंजील मंडलों में, यह इस बात का एक मॉडल बन गया है कि हम जिन कार्यों और निर्णयों का सामना करते हैं, उनके लिए भगवान का मार्गदर्शन कैसे प्राप्त करें।

मेरी माँ नियमित रूप से कहती थी, चलो प्रभु के लिए एक ऊन निकालो। विचार यह था कि यदि घटनाओं का यह सेट घटित हुआ, तो हमें वह करना होगा, या घटनाओं का वह सेट करना होगा। यदि यह दरवाज़ा खुला था, तो वह दरवाज़ा खुला था, इत्यादि।

और, निस्संदेह, भगवान ने गिदोन को दयालुतापूर्वक उत्तर दिया, भले ही मेरे विचार से यह वास्तव में विश्वास की कमी थी। वह इससे पहले ही जानता था कि परमेश्वर उससे क्या करवाना चाहता है। उसे इन अतिरिक्त चिन्हों की आवश्यकता नहीं थी।

उसे अतिरिक्त संकेतों की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए थी। इसलिए, भगवान ने दयालुतापूर्वक इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया, भले ही यह एक प्रकार का मूर्खतापूर्ण, अनावश्यक अनुरोध था। और, भगवान ने निश्चित रूप से समय-समय पर मेरी माँ की प्रार्थनाओं का उत्तर इसी प्रकार दिया।

और निस्संदेह, मुझे यकीन है, कई अन्य ईसाई भी हैं। लेकिन, मेरा विचार है कि ईश्वर की इच्छा का पालन करने के बेहतर उदाहरण, उदाहरण के लिए, यशायाह हैं। यशायाह अध्याय 6 में, जब यशायाह मन्दिर में परमेश्वर की महिमा देख रहा होता है और एक आवाज सुनता है, कहता है, मैं किसे भेजूं? यशायाह यह नहीं कहता, ठीक है, मुझे एक ऊन निकालकर इसे इस तरह या उस तरह से करने दो।

यशायाह बस इतना कहता है, मैं यहाँ हूँ, मुझे भेजो। या, शिष्यों। जब यीशु ने उन्हें अपने पीछे आने के लिये बुलाया, तो उन्होंने अपना जाल गिरा दिया और उसके पीछे हो लिये।

तो, उन उदाहरणों में, भगवान की इच्छा स्पष्ट थी, और यशायाह और शिष्यों ने बिना किसी सवाल के पालन किया। यहाँ, परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट थी। गिदोन को भी यही करना चाहिए था।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि कई बार ईश्वर की इच्छा तुरंत स्पष्ट नहीं होती है। हममें से कई लोगों के लिए, हमें ऐसे निर्णय लेने होते हैं जो विशेष रूप से बाइबल में या किसी विशेष रहस्योद्घाटन से हमारे सामने प्रकट नहीं होते हैं। तो, जीवनसाथी का चुनाव, नौकरी का चुनाव, स्कूल कहाँ जाना है इसका चुनाव।

कभी-कभी हमारे पास पवित्रशास्त्र में इसके वास्तविक उत्तर नहीं होते हैं। और हम कह सकते हैं, हे प्रभु, कृपया यह दरवाज़ा खोलो या वह दरवाज़ा बंद करो, और यह मार्गदर्शन का तरीका बन जाएगा। तो, मुझे लगता है कि निश्चित रूप से, भगवान उन तरीकों से काम करता है।

लेकिन मैं बस खुद को सावधान करना चाहता हूँ कि जब भगवान की इच्छा स्पष्ट हो, तो हमें उस तरह से देरी की रणनीति में शामिल नहीं होना चाहिए जैसा कि गिदोन यहां कर रहा है। तो, यह अध्याय 7 और 8 में आने वाली बड़ी लड़ाइयों की प्रस्तावना है। गिदोन ने बाल और अशेरा की

वेदियों को ध्वस्त करके कुछ अच्छे काम किए हैं। और उस ने यहोवा के उस दूत को जो उसे दिखाई दिया था, उत्तर दिया है।

और अब अध्याय 7 और 8 में, मिद्यानियों के विरुद्ध ये बड़ी लड़ाइयाँ हैं। यह दो खंडों में है, एक अध्याय 7 में मुख्य सेना के विरुद्ध। अध्याय 8 में, ऐसा प्रतीत होता है कि गिदोन के पास मिद्यानियों के राजाओं के प्रति व्यक्तिगत प्रतिशोध है।

और वहाँ यह इतनी गुलाबी तस्वीर नहीं है। लेकिन यह सब गिदोन और उसके 300, या उसके आदमियों की कहानी से प्रस्तुत किया गया है। यह अंततः 300 हो जाता है।

और हम श्लोक 1 से 8 में देखते हैं, यही वह कहानी है जो आने वाले समय के लिए मंच तैयार करती है। और यह विडम्बना है कि अध्याय 7 गिदोन के नाम यारोबाम से शुरू होता है। यह हमें बाल के विरुद्ध उस विवाद की याद दिलाता है जो हमने अध्याय 6 में देखा है। तो, यह कहता है, भगवान गिदोन से कहते हैं कि तुम्हारे पास बहुत सारे आदमी हैं।

यहाँ, पद 2। और इसलिए, गिदोन कहता है कि जो कोई डरता है और घर जाना चाहता है, वह बेझिझक घर जा सकता है। पता चला कि 22,000 बचे हैं और 10,000 बचे हैं। तो, उसके पास जो संख्या है वह शुरुआत में 32,000 प्रतीत होती है।

22,000 चले गये और उसके पास 10,000 आदमी हैं। वह अभी भी एक बहुत प्रभावशाली लड़ाकू शक्ति है। परन्तु प्रभु कहते हैं कि अभी भी बहुत सारे हैं।

और उस ने उनको नाले में ले जाकर जल पिलाया। और वास्तव में क्या हो रहा है, यह कैसे काम करता है इसकी कोई स्पष्ट तस्वीर नहीं है। लेकिन जो कोई अनुचित तरीके से या गलत तरीके से पानी पीता है उसे घर भेज दिया जाता है।

और अंत में यह पता चलता है कि केवल 300 ही हैं जिन्हें वह युद्ध में ले जाएगा। और निस्संदेह, उस कहानी का पूरा मुद्दा यह है कि मिद्यान की ताकतों से मुकाबला करने के लिए यह बहुत छोटी ताकत है। अध्याय 8 में, श्लोक 15 में, यह उल्लेख है कि सेना में 15,000 लोग थे जो बचे थे क्योंकि 120,000 लोग मारे गए थे।

तो, ये बहुत बड़ी संख्याएँ हैं। अब, हमने जोशुआ की पुस्तक के संदर्भ में उल्लेख किया है कि पुराने नियम में बड़ी संख्याएँ एक कांटेदार मुद्दा हैं। और ऐसा हो सकता है कि हिब्रू के साथ कुछ भाषाई समस्या के कारण ये संख्या 1,000 के कारक से बढ़ गई हो।

तो, न्यायाधीश 8 में यहाँ 150 और 1,200 आदमी रहे होंगे। लेकिन निश्चित रूप से, गिदोन के समय में यहाँ 300 एक वास्तविक संख्या प्रतीत होती है। और मिद्यान के गिदोन में संख्या जो भी हो, उन महान ताकतों का विरोध करने के लिए यह अभी भी बहुत छोटी संख्या है। तो, बात यही है।

जाहिर है, इसके पीछे अंतर्निहित बिंदु यह है कि जब इज़राइल जीत हासिल करता है, और निश्चित रूप से, हम जानते हैं कि इज़राइल जीतता है, तो इसका श्रेय ईश्वर को दिया जाना चाहिए, न कि गिदोन या लोगों को। तो, मेरी प्रस्तावना, यही होता है। और इसलिए, अध्याय 8 में, मुझे खेद है, अध्याय 7, इस परिचय के बाद, छंद 9 से शुरू होकर और उसके बाद, भगवान उसे निर्देश देते हैं।

और वह नीचे छावनी में जाने वाला है। और इसलिए, गिदोन अपने नौकर के साथ शिविर में चुपचाप घुस जाता है। और वह मिद्यानियों में से एक को अपने एक साथी से उस स्वप्न के विषय में बात करते हुए सुनता है जो उसने देखा था।

और एक स्वप्न हुआ, कि जौ की एक बड़ी रोटी मिद्यान की छावनी में गिरी, और सब को लगी, और सब मर गए। और कॉमरेड ने उस सपने की व्याख्या करते हुए कहा, उह-ओह, समस्या, जो गिदोन के शिविर, गिदोन की तलवार और उसके सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। और अब हम श्लोक 14, अध्याय 7 में हैं। यह इस्राएल के योआश के पुत्र गिदोन की तलवार के अलावा और कुछ नहीं है।

परमेश्वर ने मिद्यान और सारी छावनी को उसके हाथ में कर दिया है। यह इस्राएल के जासूसों से राहाब के शब्दों की प्रतिध्वनि है, जहां वह कहती है, हमने सुना है कि तुम्हारे भगवान ने मिस्रियों और सीहोन और ओग से क्या किया है, और मैं जानता हूं कि भगवान ने तुम्हें यह देश दिया है। यहाँ, यह आदमी इस सपने को समझता है, यह मिद्यानी आदमी इस सपने को समझता है कि हम डूब गये हैं।

हम इस्राएल के परमेश्वर का विरोध नहीं कर सकते। तो, श्लोक 15 और उसके बाद में गिदोन को इसके द्वारा प्रोत्साहित किया गया है। और उसने अपने आदमियों को समूहों में बाँट दिया, और हर एक के पास तुरहियाँ थीं, और उनके पास मशालें और खाली घड़े थे।

ये वास्तव में आमतौर पर युद्ध के हथियार नहीं हैं। लेकिन यही तो वे अपने साथ ले जाते हैं। और पद 19 में वह उन से कहता है, जब मैं तुरही बजाऊँ, तब मैं और मेरे सब लोग तू मेरे साथ फूँकें, तब छावनी के चारों ओर तुरही बजाना, और यहोवा और गिदोन के लिथे जयजयकार करना।

तो, हम देखते हैं कि वे ऐसा करते हैं। आयत 19 में, उन्होंने तुरही बजाई, और घड़े तोड़ दिए, और यह मिद्यान के बड़े शिविर को घेर रहा है। और वे सब चिल्ला उठे, यहोवा के लिये और गिदोन के लिये तलवार।

और हर कोई अपने स्थान पर खड़ा हो गया, सेना भाग गई, और यह पता चला कि सभी मिद्यानी जाग गए, और वे इतने भ्रमित हो गए, कि उन्होंने एक दूसरे को मार डाला। और इसलिए यह महान विजय की विधि है। और अंत में, आयत 23 में, यह कहा गया है, इस्राएल के लोगों को नप्ताली और आशेर और मनश्शे से बुलाया गया, और उन्होंने मिद्यानियों का पीछा किया।

और इसलिए, यह देश के उत्तरी भाग में कई जनजातियों का एक संयुक्त प्रयास है। उन्होंने मिद्यानियों का पीछा किया, पद 24 में उन्होंने उन्हें पकड़ लिया। पद 25 में, उन्होंने मिद्यान के दो राजकुमारों, ओरेब और ज़ीव को पकड़ लिया।

उन्होंने उन्हें वहीं मार डाला। और वे अध्याय 7 के अंतिम श्लोक में अपने सिरों को गिदोन के पास वापस ले आए। एक बड़ी जीत दी गई। और यदि कहानी यहीं समाप्त हो गई, तो हम मान लेंगे कि इसका श्रेय ईश्वर को दिया जाएगा।

हम एक और गीत की उम्मीद कर सकते हैं, जैसे डेबोरा का गीत, या पुस्तक के लेखक के बारे में कुछ बयान जिसमें कहा गया है कि भगवान ने इसे मिद्यान के हाथों में दिया था, या मिदियन स्वयं इसके लिए भगवान की प्रशंसा कर रहा था। लेकिन हमारे पास वह नहीं है। हमारी एक कहानी जारी है।

और जैसे-जैसे चीजें आगे बढ़ती हैं, हमारे पास गिदोन को काफी सकारात्मक रोशनी में नहीं दिखाया जाता है। यहां, सबसे पहले, हमारे पास अध्याय 8, शुरुआत में एप्रैम की जनजाति है, जो शिकायत कर रही है कि उन्हें पहले लड़ाई में मदद करने के लिए नहीं बुलाया गया था। और इसलिए गिदोन प्रतिक्रिया देता है और वास्तव में प्रतिक्रिया नहीं देता है।

वह सिर्फ इतना कहता है कि मैं पद 5 में मिद्यान के दो राजाओं का पीछा करने में व्यस्त हूँ। और इसमें कुछ आगे-पीछे होता रहता है। तो, ऐसा प्रतीत होता है कि इस अध्याय में, लड़ाई पूरे इज़राइल के गठबंधन की नहीं है, बल्कि गिदोन के अपने व्यक्तिगत एजेंडे को आगे बढ़ाने की है। महत्वपूर्ण बात यह है कि अध्याय के इस भाग में ईश्वर गिदोन को बाहर भेजने वाले के रूप में प्रकट नहीं होता है।

लेकिन गिदोन, उदाहरण के लिए, पद 10, सीबा और सल्मुना का पीछा कर रहा है। ये दो राजा हैं। और उनके पास वहां अपनी सेना है।

और गिदोन उनका पीछा कर रहा है। और अंत में, वह उन्हें पकड़ लेता है और अपने एक जवान आदमी को इस खंड के अंत में इन राजाओं को मारने का आदेश देता है। पद 20 में, वह अपने पहलूँठे गैदर से कहता है, उठो और उन्हें मार डालो।

परन्तु उस युवक ने डर के कारण अपनी तलवार नहीं निकाली। तो, फिर ये दोनों राजा पद 21 में गिदोन को ताना देना शुरू कर देते हैं। स्वयं उठो, हम पर गिरो।

क्योंकि जैसा मनुष्य है, वैसी ही उसकी शक्ति है। वे उसकी मर्दानगी पर लगभग सवाल उठा रहे हैं। क्या तुम कायर हो? क्या आप हम पर गिरने से डरते हैं? इसलिए, गिदोन ने चुनौती स्वीकार की, उठ खड़ा हुआ और उन्हें मार डाला, और उनके पास मौजूद आभूषण ले लिया।

इसलिए, मिद्यानियों के लोगों का पूरा वर्ग अब शांत हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने हजारों लोगों को खो दिया है। उनके नेता चले गये।

और इसलिए, अब हमारे पास उसका परिणाम है। यहां जीत दिलाने के लिए भगवान की स्तुति के भजन के बजाय, हमारे पास कुछ बहुत अलग है। तो, श्लोक 22 और 23 से, श्लोक 22 से हम शुरू करेंगे।

हमारा एक बहुत ही उल्लेखनीय वक्तव्य है। कुछ मायनों में यह वास्तव में आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए। परन्तु यह उल्लेखनीय है, क्योंकि इस्राएल के लोग गिदोन के पास आए, पद 22, और कहा, तुम, अपने बेटे, अपने पोते, हम पर भी शासन करो।

यह राजसत्ता की भाषा है। यह राजसत्ता की भाषा है। तो, वे गिदोन से कह रहे हैं, तुम्हें हमारा राजा होना चाहिए, और यह एक राजवंशीय उत्तराधिकार होना चाहिए।

यह आप, आपका बेटा, आपका पोता होना चाहिए, जैसे हमारे आसपास की हर संस्कृति में राजा होते हैं। मैंने इज़राइल में राजत्व की स्थापना और ईश्वरीय आदर्श राजा के बीच विरोधाभास के बारे में एक अलग व्याख्यान में उल्लेख किया था, जिसके बारे में बाइबल व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, अध्याय 17 में बात करती है, जहाँ राजा वह होता है जिसे ईश्वर चुनता है, वह होता है इस्राएली को अपनी सेना पर भरोसा नहीं करना चाहिए, घोड़े नहीं बढ़ाने चाहिए, मिस्र के साथ विदेशी गठबंधनों पर भरोसा नहीं करना चाहिए, पत्नियों या धन को नहीं बढ़ाना चाहिए। बल्कि राजा, इस्राएली राजा, आदर्श इस्राएली राजा को परमेश्वर के वचन में निहित होना चाहिए।

यही इस राजा के लिए सफलता की कुंजी है, और यह एक अत्यंत प्रतिसांस्कृतिक तस्वीर है। मैं आपसे उस वीडियो खंड को देखने का आग्रह करूंगा क्योंकि वह एक वीडियो खंड है जिसमें न केवल यहोशू की पुस्तक, बल्कि न्यायाधीशों की पुस्तक और यहां तक कि रूथ की पुस्तक भी शामिल है। और व्यवस्थाविवरण 17, श्लोक 14 से 20 में राजत्व के बारे में अनुच्छेद की समीक्षा करने के लिए वापस जाएं।

यहीं पर हम इज़राइल में आदर्श राजा की तस्वीर देखते हैं। अब दुख की बात है कि अधिकांश राजा उस आदर्श पर खरे नहीं उतरे, लेकिन भगवान एक राजा से यही चाहते थे। और जैसा कि मैंने अभी कहा, वह तस्वीर आसपास के देशों में राजाओं की तस्वीर के प्रति पूरी तरह से प्रतिकूल है।

मैं आपको यहां एक दृश्य चित्रण दूंगा जो मैंने दूसरे व्याख्यान में भी किया है, लेकिन मैं मिस्र की राहत से एक दृश्य खींचने की कोशिश करने जा रहा हूं जिसमें फिरौन को उसके रथ में दिखाया गया है। यह उस चित्र का मेरा प्रतिपादन है जो मिस्र की राहतों में एक महान युद्ध की बड़ी राहत के हिस्से के रूप में पाया जाता है। जब मैं इसे बनाता हूं, तो मेरे छात्र हमेशा शिकायत करते हैं कि मैं कितना बुरा कलाकार हूं, इसलिए मैं इसके लिए माफी मांगता हूं।

लेकिन एक तस्वीर ऐसी भी है और इसमें फिरौन के दुश्मन भी शामिल हैं। यहाँ दुश्मन हैं। वे ज़मीन पर तितर-बितर हो गए हैं, और फिरौन का रथ और घोड़ा उन्हें रौंद रहे हैं।

इस चित्रण का पूरा सार यह है कि फिरौन को मिस्र में महान योद्धा के रूप में देखा जाता है, एक शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में जो अपने सभी दुश्मनों पर सहजता से विजय प्राप्त करता है और

उन्हें अपने अंगूठे और अपने पैरों, अपने रथ और अपने घोड़ों के नीचे रखता है। और उस तरह की तस्वीर बेबीलोन और असीरिया की राहतों में भी पाई जाती है। तो, पूरे पूर्वी निकट पूर्व में यह विचार प्रचलित है कि समाज में राजा को सबसे बड़ा योद्धा होना चाहिए।

या, दूसरा पहलू, सबसे महान योद्धा वह है जिसे राजा बनना चाहिए। इज़राइल के राजा की बाइबिल की तस्वीर इसके ठीक विपरीत है। पुनः, व्यवस्थाविवरण 17 में, यह कहा गया है कि राजा को घोड़ों की संख्या नहीं बढ़ानी चाहिए।

घोड़े ही रथों को खींचते थे। रथ प्राचीन काल में टैंकों के समकक्ष थे, और वे सेना की रीढ़ थे। इसलिए घोड़ों की संख्या बढ़ाना, एक तरह से, अपनी सुरक्षा या आक्रमण को बढ़ाना, सेना का निर्माण करना था।

और उसकी वजह से सेना पर निर्भर रहना। इसलिये इस्राएली राजा को ऐसा नहीं करना था। तो, इसलिए, यह एक बहुत ही गहराई से प्रतिसांस्कृतिक चीज़ थी।

इस्राएल के राजा को परमेश्वर के वचन को अपने जीवन का हिस्सा मानकर युद्ध लड़ने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना था। दैवीय योद्धा के रूप में ईश्वर का यह संपूर्ण विचार पूरे पुराने नियम में एक महत्वपूर्ण विषय है। तो यहाँ न्यायियों 8 में, जब इस्राएल का मनुष्य गिदोन के पास आता है और यह पूछता है, और कहता है, तुझे हम पर, अपने बेटे पर, अपने पोते पर भी शासन करना चाहिए।

वे प्राचीन निकट पूर्व की मानसिकता को प्रतिबिंबित कर रहे हैं। वे इस प्रकार की राहत में जो चित्रित है उसे प्रतिबिंबित कर रहे हैं। मुझे यह भी कहना चाहिए कि मिस्रियों, अशूरियों और बेबीलोनियों के लिखित ग्रंथों में भी हमें उसी प्रकार की तस्वीर मिलती है।

राजा यह दावा कर रहे हैं कि वे सबसे महान हैं और उन्होंने ही सभी चीज़ों पर विजय प्राप्त की है। तो, राजा महान फोकस है। एक तरह से, वे आधुनिक समय के तानाशाहों की तरह हैं जो अपना एक पंथ बनाते हैं।

हर चीज़ उनके इर्द-गिर्द घूमती है। और यहां बड़ी त्रासदी, यह एक विडंबना है, लेकिन इस परिच्छेद में एक दुखद विडंबना यह है कि ये लोग जो गिदोन को अपना राजा बनने के लिए कह रहे हैं, क्या कारण है कि वे ऐसा चाहते हैं? पद 22 का अन्त, क्योंकि तू ने हम को मिद्यान के हाथ से बचाया है। तो फिर, ये लोग बेवकूफ हैं।

उन्होंने सेना को 300 से कम करने के सबक को पूरी तरह से पलट दिया है। इसका पूरा मुद्दा स्पष्ट है, आपके चेहरे पर नाक की तरह स्पष्ट है, कि जब यह उस छोटी संख्या तक पहुंच जाता है, तो जो भी जीत होगी वह प्रभु के हाथ से होगी, गिदोन या किसी और के नहीं। इसलिए वे, एक तरह से, अपनी मुक्ति के लिए मनुष्यों की ओर देखने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति की ओर लौट रहे हैं, और यह एक दुखद बात है।

अब, अपने श्रेय के लिए, गिदोन ने सम्मान अस्वीकार कर दिया। गिदोन कहता है, मैं तुम पर प्रभुता न करूंगा। मेरा पुत्र तुम पर शासन नहीं करेगा।

प्रभु यहोवा तुम पर शासन करेगा। तो यह बिल्कुल वही बात है जो आपको कहनी चाहिए थी, और यह एक अच्छी बात है। जिन चर्चों में मैं बड़ा हुआ, वहाँ कुछ ऐसी घटनाएँ थीं जिन्हें कभी-कभी संडे स्कूल उत्तर कहा जाता था।

और यह पता चला है कि, जब आप एक बच्चे के रूप में बड़े हो रहे होते हैं और आप संडे स्कूल में होते हैं, तो संडे स्कूल का उत्तर हमेशा एक प्रकार का अति आध्यात्मिक उत्तर होता है जिसे सही उत्तर माना जाता है। भले ही सबूत उस दिशा में इशारा न करें। तो, इसके बारे में एक हास्यप्रद कहानी है।

संडे स्कूल में कक्षा में बच्चों के साथ एक शिक्षिका थी, जिसने एक हाथी का चित्र बनाया था और वह इस पर एक मुद्दा बनाना चाहती थी, किसी प्रकार का बिंदु, और उसने कक्षा से कहा, यह क्या है? और कोई नहीं बोला। और उसने कहा, अच्छा, क्लास, यह क्या है? तुम जानते हो यह क्या है। यह एक परिचित जानवर है।

और कोई नहीं बोला। आखिरकार, पीछे बैठे एक छोटे लड़के ने डरते-डरते कहा, ठीक है, मुझे पता है कि उत्तर यीशु होगा, लेकिन मुझे यह निश्चित रूप से एक हाथी जैसा दिखता है। तो, वह इस तरह से बंधा हुआ था कि यह हमेशा अति आध्यात्मिक उत्तर था जो उसे कहना चाहिए था, भले ही सबूत इसे एक अलग दिशा में इंगित कर रहे हों।

तो, मेरे लिए, एक तरह से, गिदोन, यहाँ श्लोक 23 में अपनी प्रतिक्रिया में, संडे स्कूल का उत्तर दे रहा था। वह जानता था कि उसे क्या कहना है। ये शब्द बिल्कुल सही शब्द हैं।

लेकिन तुरंत अगले श्लोक में, हम देखते हैं कि वह उस उत्तर को कमजोर करना शुरू कर देता है क्योंकि वह एक तरह से राजा की तरह व्यवहार करना शुरू कर देता है। वह एक नेता की तरह व्यवहार करना शुरू कर देता है और वह उन्हें प्रभु की दिशा में नहीं, बल्कि भटका रहा है। तो, श्लोक 24 में, गिदोन कहता है, मुझे अपना सामान लाओ।

मुझे अपना सारा कीमती सामान ले आओ। और वे उत्तर देते हैं, हम स्वेच्छा से देंगे। यह निर्गमन की एक विडम्बनापूर्ण प्रतिध्वनि है जब मूसा ने कहा, मुझे अपना सामान लाओ, और वे स्वेच्छा से अपना खजाना ले आए।

और वह तम्बू का निर्माण करना था। अब यहाँ तम्बू में जितनी भी खूबसूरत चीज़ें हैं, गिदोन उनके साथ कुछ अलग करता है। और पद 27 में गिदोन ने उसका एक एपोद बनाकर अपने ओप्रा नगर में रखा।

ठीक से निश्चित नहीं है कि एपोद क्या था, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि यह किसी प्रकार का कवच था जिसे याजक या कोई अन्य व्यक्ति उपयोग करता था जिसमें कभी-कभी 12 पत्थर होते थे। और इसे खूबसूरती से सजाया गया था और इसका उपयोग कभी-कभी भगवान की इच्छा को

समझने के लिए किया जाता था। किसी तरह ईश्वर इसे किसी न किसी तरीके से अपनी इच्छा संप्रेषित करने के लिए प्रेरित करेगा।

लेकिन यह एक प्रकार का तावीज़ बन गया, लगभग उन लोगों के लिए जो इसे एक जादुई चीज़ के रूप में देखना चाहते थे। और इस प्रकार यहां गिदोन ने पद 27 में इन सब वस्तुओं का एक एपोद बनाकर अपने नगर में रखा, और सब इस्राएल ने उसके पीछे व्यभिचार किया। उसके पीछे सारे इस्राएल ने व्यभिचार किया।

उन्होंने इसके साथ वेश्या का अभिनय किया। बाइबल में वेश्यावृत्ति की सजीव कल्पना के अनुसार, वेश्याओं के पीछे जाना स्वाभाविक है जो इस्राएलियों ने मोआबी महिलाओं और अन्य लोगों के साथ किया। लेकिन इसका एक आलंकारिक उपयोग है, इसका एक प्रतीकात्मक उपयोग है, जहां भगवान खुद को इसराइल के पति के रूप में बोलते हैं, और इज़राइल अन्य देवी-देवताओं का अनुसरण करके खुद को वेश्यावृत्ति कर रहा है।

और यहीं विचार है. वे उसके अलावा किसी और चीज़ का अनुसरण कर रहे हैं। और यह एक दुखद बात है.

इस प्रकार सारे इस्राएल ने उसके पीछे व्यभिचार किया, और वह गिदोन और उसके परिवार के लिये फंदा बन गया। तो ये अच्छी बात नहीं है. अब, पद 28 गिदोन की कहानी के इस भाग का एक प्रकार से समापन है।

और इसलिए, यह कहता है, मिद्यान को वश में कर लिया गया था, और यह सच है। उन्होंने बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ जीतीं, और उन्होंने फिर अपना सिर नहीं उठाया। मोआबियों को अब कोई खतरा नहीं है।

और उसके समय में भूमि चालीस वर्ष तक विश्राम में रही। तो इस तरह गिदोन की कहानी समाप्त हो गई। लेकिन यह एक मिश्रित बैग है.

वह शुरुआत में ही अच्छे काम करता है। अंत में, वह उतना अच्छा नहीं है। यह हमें श्लोक 29 और उसके बाद के 70 पुत्रों के बारे में बताता है।

श्लोक 30 कहता है 70 पुत्र। और पद 31 हमें उसके एक पुत्र के बारे में बताता है। उसकी एक रखैल थी जो उसके घर में नौकर की तरह थी।

और रखैलें, हम देखते हैं कि हाजिरा इब्राहीम की रखेल थी। और जिल्पा और बिलहा उत्पत्ति की पुस्तक में याकूब की रखैलें थीं। वे एक घर में कर्मचारी, नौकर, स्लैश गुलाम थे।

और वे आमतौर पर बच्चे पैदा करने का कार्य करते थे। यहाँ, गिदोन का एक बेटा है, और वह पद 31 में उसे अबीमेलेक कहता है। और हम यहाँ उस बात की समीक्षा करेंगे जो मैंने पहले व्याख्यान में कही थी।

लेकिन हिब्रू और अरामी में बस एक छोटा सा पाठ। हम इस शब्द को न्यू टेस्टामेंट से जानते हैं, अब्बा। यह पिता के लिए अरामी शब्द है।

और पिता के लिए हिब्रू शब्द उसी से संबंधित है। यह अव है। यदि हम एवी कहते हैं, तो हिब्रू में इसका अंग्रेजी में अनुवाद मेरे पिता के रूप में किया जाता है।

और फिर राजा के लिए शब्द मेलेक है। तो, हमने देखा कि गिदोन अपने बेटे का नाम रख रहा है, मेरे पिता को राजा, या मेरे पिता को राजा। तो पद 23 में उनके कथन के प्रकाश में यह एक प्रकार की विडंबना है जहां यह कहता है, मैं तुम पर शासन नहीं करूंगा, मेरा बेटा तुम पर शासन नहीं करेगा, प्रभु तुम पर शासन करेगा, और फिर भी वह अपने बेटे का नाम मेरे पिता के राजा के रूप में रखता है।

तो, यह एक और तरीका है जिसमें मुझे लगता है कि उसके कार्यों ने संडे स्कूल के उस उत्तर को कमजोर कर दिया है जो उसने श्लोक 23 में दिया था। जैसे ही गिदोन मर जाता है, श्लोक 33, वह अच्छी बुढ़ापे में मर जाता है, इसलिए यह सब अच्छा है। लेकिन जैसे ही वह मर गया, लोग फिर से मुड़ गए और बाल देवताओं के पीछे हो गए, और बाल को अपना देवता बना लिया, पद 33।

और उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण न किया, और यह अच्छी बात नहीं। यह कुछ कहने से समाप्त होता है, उन्होंने यरुबाल के परिवार, अर्थात् गिदोन के प्रति उस सभी भलाई के बदले में दृढ़ प्रेम नहीं दिखाया जो उसने इस्राएल के लिए किया था। तो, गिदोन ने अच्छा किया था, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, लेकिन दुख की बात है कि उसने ऐसा नहीं किया, ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अच्छी तरह से समाप्त नहीं किया, उन शब्दावली का उपयोग करें जो हम आज कभी-कभी अपने जीवन को अच्छी तरह से समाप्त करने के बारे में सुनते हैं, भगवान का हर तरह से अनुसरण करते हुए। समाप्त।

तो, अगला अध्याय हमें गिदोन के परिणाम के बारे में बताता है, कि यह इस्राएल के प्रभु से विमुख होने और कनानियों के विरुद्ध युद्ध करने की कोई नई कहानी नहीं है, बल्कि यह कहानी है कि इस अबीमेलेक के साथ क्या होता है, और वह किस प्रकार विकृत करता है चीजें भी। तो, अबीमेलेक गिदोन का पुत्र है जिसके पास सत्ता पर हिंसक कब्ज़ा है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह अध्याय 8 में राजा के लिए इस अनुरोध से स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ता है। वे अनिवार्य रूप से राष्ट्रों की तरह एक राजा की मांग कर रहे हैं, और एक अर्थ में, अबीमेलेक के व्यक्ति में, उन्हें उस तरह का राजा मिलता है एक राजा।

उन्हें ऐसा राजा मिलता है जो खुद को एक महान योद्धा के रूप में स्थापित करता है। याद रखें, अबीमेलेक ने अपने 70 भाइयों को मार डाला, गिदोन के 72 बेटे हैं। अबीमेलेक ने उनमें से 70 को मार डाला, और एक योताम बच निकला।

परन्तु अबीमेलेक उस योद्धा राजा का एक अच्छा उदाहरण है जिसके बारे में लोग सोच रहे थे, परन्तु वह यहोवा की दृष्टि में बहुत बुरा उदाहरण निकला। इसलिए वह शकेमियों की मदद से अपने ही भाइयों को बेरहमी से मारकर, अध्याय 9, श्लोक 1-6, सत्ता में आता है। और फिर पद 6

में उन्होंने उसे शकेम में राजा बना दिया। उसका भाई योताम बच जाता है, लेकिन बाकी सभी लोग, शकेमवासी, उसे अपना राजा बनाने में उसकी सराहना करते प्रतीत होते हैं।

अतः योताम, जो भाग निकला हुआ भाई है, इस बारे में सुनता है, और वह गिरिजिम पर्वत की चोटी पर आता है, जो शकेम के ठीक ऊपर है, और जोर से चिल्लाता है और ऐसी वाणी बोलता है जो स्वयं शकेमियों पर अभियोग है, यह अबीमेलेक पर अभियोग है, और इसे मूलतः एक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पेड़ों की कहानी बताता है। और वृक्ष अपने ऊपर राजा नियुक्त करने को निकले।

और उन्होंने पद 8 कहा, और जलपाई के वृक्ष से कहा, हम पर राज्य करो! अध्याय 8, श्लोक 22 की भाषा को दोहराते हुए, इस्राएल के लोग गिदोन के पास आये और कहा, यहाँ हम पर शासन करो। पेड़ ऐसा कर रहे हैं। और जैतून का पेड़ मना कर देता है, वह कहता है, मैं अपना सामान नहीं छोड़ने वाला।

और फिर वे अंजीर के पेड़ के पास जाते हैं, पद 10, वही बात। उन्होंने दाखलता से कहा, पद 12, वही बात। और अंत में, वे सबसे छोटे और सबसे निचले पौधों तक पहुंच जाते हैं, और वे ब्रैम्बल के बारे में पूछते हैं।

और ब्रैम्बल कहता है, हाँ, निश्चित रूप से, मैं वह करूँगा। लेकिन यह राजसी पेड़ों के स्तर से इस निम्नतम स्तर तक नीचे जाने की एक हास्यास्पद तस्वीर है, और यह स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति का अभियोग है जिसे राजा के रूप में स्थापित किया गया है। फिर, एक राजा के लिए अनुरोध से जो कुछ निकलता है उसकी एक प्रतिध्वनि सैन्य कौशल पर आधारित है।

अध्याय 8, श्लोक 22 में यही पाठ है, और हम देखते हैं कि इसे अबीमेलेक के सामने नकारात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इसलिए, उन्होंने जो किया है उसकी हास्यास्पदता दिखाने के लिए वह उस कहानी का उपयोग करता है, और फिर वह उस पर टिप्पणी करना शुरू करता है और श्लोक 16 में इसकी व्याख्या करता है। इसलिए, यदि आपने अबीमेलेक को राजा बनाते समय अच्छे विश्वास और ईमानदारी से काम किया है, और इसी प्रकार, यदि तुमने अच्छे विश्वास से काम किया है, पद 19, तो तुम्हें अबीमेलेक में आनन्दित होना चाहिए और उसे तुममें आनन्दित होने देना चाहिए।

परन्तु यदि नहीं, तो अबीमेलेक से आग निकले, और शकेम और बेतमेलो के हाकिमों को भस्म कर दे, और वह आग निकले। और फिर वह भाग जाता है। तो यह कहता है, पद 22, अबीमेलेक इस्राएल पर लगभग तीन वर्ष तक राज्य करता रहा।

परमेश्वर ने उसके और शकेम के नेताओं के बीच एक दुष्ट आत्मा भेजी। तो मूल रूप से जिन लोगों ने उसे राजा के रूप में स्थापित किया था, अब उनके बीच संघर्ष है, उनके बीच तनाव है, और संघर्ष है, इत्यादि। कहानी के अंत तक, यह एक लंबा अध्याय है जो बहुत सारे उतार-चढ़ाव से गुजरता है, आखिरकार, अबीमेलेक शकेम और शकेमियों के खिलाफ हो रहा है, और श्लोक 45 में, हम देखते हैं कि अबीमेलेक पूरे दिन शहर के खिलाफ लड़ता है।

उसने शहर पर कब्ज़ा कर लिया, वहां मौजूद लोगों को मार डाला, शहर को तहस-नहस कर दिया और उसे नमक से सील दिया। मूल रूप से नमक के साथ सिलाई करने का मतलब है कि यह सिर्फ उजाड़ है, कुछ भी नहीं बढ़ सकता है, इत्यादि। उसके बाद, अभी भी उसके लिए प्रतिरोध के कुछ क्षेत्र हैं, और अंततः, वह पास के थेबेज़ नामक स्थान के टॉवर पर आता है, वहाँ एक मजबूत टॉवर है, श्लोक 51, और हर कोई अपने आप को वहाँ बंद कर लेता है, और अबीमेलेक आता है इसके खिलाफ लड़ो और उस टावर को जलाने के लिए तैयार हो जाओ।

एक महिला उसके सिर पर चक्की का पाट फेंक देती है और वह मारा जाता है। इसलिए, आयत 56 में, परमेश्वर ने अबीमेलेक की बुराई का बदला दिया, जो उसने अपने 70 भाइयों को मारकर अपने पिता के विरुद्ध की थी, और परमेश्वर ने शेकेम के लोगों की बुराई भी उनके सिर पर लौटा दी, और उन पर योताम का श्राप आया, यारोबाम का पुत्र। तो, अबीमेलेक ने, अपने 70 भाइयों को मारने में, भगवान ने उस पर पलटवार किया, और वह, उद्धरण-अनउद्धरण, तीन साल तक राजा के रूप में शासन करता है।

एक बात हम कह सकते हैं, ठीक है, तकनीकी रूप से, एक अर्थ में, अबीमेलेक इज़राइल का पहला राजा है, लेकिन बाइबल उसके साथ कभी भी ऐसा व्यवहार नहीं करती है क्योंकि वह भगवान द्वारा नहीं चुना गया था। व्यवस्थाविवरण 17 में, राजा के ईश्वर के लिए एक मानदंड यह है कि ईश्वर को उसे चुनना होगा। अबीमेलेक वह व्यक्ति है जिसने एक बार फिर इस विचार से बाहर आकर खुद को राजा के रूप में स्थापित किया कि वह एक महान योद्धा है।

लेकिन शेकेम का पाप, शेकेम की बुराई उनके सिर पर वापस आ रही है, इसराइल और शेकेम के बीच एक प्रकार का धब्बेदार इतिहास है, और यह अध्याय 34 में उत्पत्ति की पुस्तक तक जाता है, जहां शेकेम अदीना के साथ बलात्कार करता है, जो उनमें से एक है याकूब की बेटियाँ और उसके भाई उनसे बदला लेते हैं, और वहां कुछ बुरा खून होता है। और निश्चित रूप से, शेकेमवासी इन दिनों इज़राइल का विरोध कर रहे थे, लेकिन अंततः यह बाइबिल की शुरुआत से ही उन कहानियों पर वापस चला जाता है। और इससे इज़राइल के इतिहास में न्यायाधीशों के काल की एक धिनौनी तस्वीर का अंत हो गया।

फिर हम निम्नलिखित अध्यायों में आने वाली और भी अधिक धिनौनी कहानियों की ओर मुड़ते हैं।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 26, न्यायाधीश 6-9, गिदोन और उसके बाद है।